प्रातः क्लास ओमशान्ति 30-9-67

रिकार्ड:- मुखड़ा देख ले:- ओमशान्ति। रूहानी पार्ट धारी बच्चों प्रति बाप समझाते है। क्योंकि बजाये रही है। बेहद के नाटक में। है तो मनुष्यों का नाता। बच्चे इस समय पुरूषार्थ कर रहे है मुक्ति-जीवन मुक्ति के लिए। यह दो अक्षर राइट है। सभी मुक्ति-जीवन मुक्ति के लिए पुरूषार्थ कर रहे है। भल वेद्शास्त्र पढ़ते है, शिव की पूजा करते है, परन्तु बाप कहते है इन से मेरे को प्राप्त नही होती। क्योंकि भक्ति है ही दुर्गति मार्ग। ज्ञान से सद्गति होती है तो जरूर कोई से दुर्गति होगी। भक्ति से है दुर्गति। यह एक खेल है। जिसको कोई भी नही जानते। शिव लिंग की जब पूजते है तो उनको ब्रह्म नही कहेंगे। तब कौन है जिसको पूजते है। उनको भी ईश्वर समझ कर पूजा करते है। बाप कहते है इन सन्यासियों आद को महात्मा कह नही सकते है। यह उन्हो का अज्ञान है। दुर्गति का अभिमान है। ज्ञान का अभिमान है नही। वास्तव में अभिमान एक ही शुध्द होना चाहिए। बाप को याद करने की। यह थोड़े ही जानते है जिसकी हम पूजा करते है वह क्या है। कहते है नाम रूप से न्यारा है। फिर यह तो नामरूप हो गया ना। हीरे की चाहे पत्थर की बनाते है। तुम जब पहले2 भक्ति शुरू करते हो हीरे का बनाते है। अभी तो गरीब बन गये हो। फिर पत्थर की बनाते है। हीरे का लिंग उस समय 40-50 रूपये का होगा इस समय तो उनका दाम 5-7 लाख होगा। ऐसे हीरे अभी मुश्किल निकलते है। पत्थर बुध्दि बन गये है तो पूजा भी पत्थर की करते है ज्ञान बिगर। जब ज्ञान है तो तुम पूजा नही करते हो। चैतन्य में है उनका हीतुम याद करते हो। जानते हो याद से विकर्म विनाश होंगे। गीत भी कहते है हे बच्चो, प्राणी कहा जाता है आत्मा को। प्राण निकल गया फिर तो जैसा (मुर्दा) मरता है। आत्मा निकल जाती है। आत्मा है अविनाशी। बाकि शरीर है विनाशी। आत्मा जब शरीर में प्रवेश करती है तब चैतन्य है। बाप कहते है हे आत्माए अपने अन्दर जांच करो कहा तक दैवी गुणों की धारणा हुई है। कोई विकार तो नही है चोरी-चकारी कोई, आसुरी गुण तो नही है। आसुरी कर्तव्य करने से फिर गिर पड़ेंगे। इतना दर्जा नही पाये सकेंगे। खराब आदत को मिटाना जरूर है। देवताए कब कोई पर गुसा नही करते। वहा शेर बकरी भी कब गुसा नही करते। नहीं तो शेर को गुसा आता है तो एकदम चम्बा लगाये खाये लेती है। यहा असुरो द्वारा कितने मार खाते है। क्योंकि तुम दैवी सम्प्रदाय बनते हो। तो माया कितनी दुश्मन बन जाती है। माया के अवगुण काम करते है। मारना, तंग करना, बुरा काम करना। तुम बच्चो को तो बहुत शुध्द रहना चाहिए। चोरी-चकारी आद करना यह तो महान पाप है। बाप से तुम प्रतिज्ञा करते आये हो बाबा मेरा तो आप एक। दूसरा न कोई। हम आप को ही याद करेंगे। भक्ति मार्ग में भल गाते है परंतु उनको पता नही है कि याद से क्या होता है। वह तो बाप को जानते ही नही। एक तरफ कहते नाम रूप से न्यारा है, दूसरे तरफ फिर लिंग की पूजा करते है। कलयुग भ्रष्टाचारी दुनिया मे महान आत्मा कोई हो न सके। सब भ्रष्टाचारी ही कहेंगे। देवताए है श्रेष्टाचारी। तुम महान आत्मा श्रेष्टचारी को कहेंगे या भ्रष्टाचारी को? बाप समझाते है रावण राज्य मे एक भी श्रेष्टाचारी हो नही सकता। यह लोग तो अपने को ही श्री, श्री 108 जगद्गुरू कह देते है। जैसे बाप तुम बच्चो को अपने से भी उंच बनाते है, वैसे यह फिर बाप से भी से उंच अपने उपर टाइटल रख देते है। बाप तो कहते है अर्थ सहित तुमको उंच बनाता हूँ। यह महात्मा लोग अपने को बाप से भी उंच कह देते। तुमको आद कितना ज्ञान मिलता है। तुम्हारे आगे तो वह जैसे उल्लु लोग है। कुछ भी समझते नही। महात्मा कृष्ण को भी कहते है। कहा वो विश्व का मालिक कहा यह कलयुग मे भ्रष्टाचार से पैदा हुये। इन्हो को निर्विकारी कह नही सकेंगे। ऐसे मत समझो विकार मे नही जाते तो निर्विकारी कहेंगे। नही। पैदा तो फिर भी भ्रष्टाचार से होते है ना। वहा भ्रष्टाचार की बात नही। रावण राज्य है नही। रामराज्य सतयुग को, रावण को कहा जाता है। यहा सतयुग थोड़े ही है जो मनुष्य पावन हो। वह लोग तो मिट्टी टोपी रख देते है। तुमको अच्छी रीत समझा कर फिर समझाना है। बाप कहते है जज करो

30-4-67

जाये। श्री कृष्ण जो छोटा बच्चा स्वर्ग का प्रिन्स है वह महात्मा है या यह कलयुगी गुरु लोग वह विकार से पैदा नहीं होता है ना। वह है ही निर्विकारी दुनिया। निर्विकारी को बहुत टाइटल दे सकते हैं। विकारी का क्या टाइटल है। तुम्हारा एक गीत भी है मेहतर उन से बेहतर जो खाते मेहनत का खाना। वह लोग भी मुफ्त में खाते हैं। बाप से बेमुख कर देते। पैसे कितने हैं उन्हों के पास। गवर्मेन्ट भी उन्हों को पकड़ सकती है। तुम तो कहते हो हम ने घरबार छोड़ा है, फिर इतना धन क्यों रखते हो। आगे तो यह भिक्षा लेते थे। पैसा कब नहीं लेते थे। अभी तो कितने पैसे लेते हैं। बहुत शाहूकार हैं। फिर गवर्मेन्ट को भी मदद करते हैं। दान में देते हैं। यह सभी हैं भ्रष्टाचारी। श्रेष्टाचारी तो एक ही बाप बनाते हैं। वह है सबसे ऊँच ते ऊँच। और सभी मनुष्य पार्ट धारी हैं। तो पार्ट में जरूर आना पड़े। सतयुग है श्रेष्ठ मनुष्यों की दुनिया। जानवर आदि सब श्रेष्ट हैं। वहाँ माया रावण हो नहीं। वहाँ ऐसे कोई तमोगुणी जानवर होते नहीं। तुमको मालूम है मोर डेल है यह विकार से बच्चा पैदा नहीं करती। उनका आंसू गिरता है तो उनको डेल धारण करती है। नेशनल बर्ड कहते हैं। सतयुग में भी विकार का नाम नहीं। मोर का पंख पहला नम्बर जो फिदर है श्री कृष्ण उनके सिर में लगाते हैं। कोई तो रहस्य होगा ना। तो यह सब बातें बाप [illegible] समझाते हैं। वहाँ बच्चे कैसे पैदा होते हैं वह भी तुम जानते हो। प्यार से भी हो सकता है। वहाँ भी भ्रष्टाचारी बिलकुल होती नहीं। बाप कहते हैं तुमको देवता बनाते हैं तो अपनी जांच पूरी करो। नहीं तो फिर विश्व का मालिक पीछे ही बन सकेंगे। जैसे यह तुम्हारी आत्मा जिन्दी है इसमें मूंझने की कोई दरकार नहीं। कोई कहते हैं हम देखें किसको। बाप कहते हैं देखने वालों की तो तुम ने बहुत पूजा की। फायदा कुछ भी नहीं हुआ। अब यथार्थ रीति मैं तुमको समझाता हूँ। मेरे में सारा पार्ट भरा हुआ है। सुप्रीम सोल है ना। सुप्रीम फादर। कोई भी बच्चा अपने लौकिक फादर को ऐसे नहीं कहेंगे। एक को ही कहा जाता है। सन्यासियों के तो बच्चे हैं नहीं। जो बाप कहे। यह तो सभी आत्माओं का बाप है। जो वर्सा देते हैं। उन्हों का कोई गृहस्थ आश्रम तो ठहरा नहीं। बाप बैठ समझाते हैं तुम ने ही 84 जन्म भोगे हैं। पहले2 तुम सतोप्रधान सुप्रीम देवी-देवता थे। फिर नीचे उतरते आये हो। अभी तो अपने को सुप्रीम पीछे ही कहो। अभी तो नीच समझते हैं। कहते हैं निमाना समझो। सर ऊंचा न करो। यह स्वामी भक्त ऐसे2 सुनाते हैं। बाप बार2 समझाते हैं मूल बात को अपने अन्दर देखो हम से कोई विकर्म तो नहीं होता। रात को जरूर पोतामेल निकालो। व्यापारी हमेशा पोतामेल निकालते हैं ना। गवर्मेन्ट सर्वेन्ट किसका पोतामेल निकालेंगे। कुछ भी नहीं। इस ज्ञान मार्ग में भी व्यापारी तीखे जाते हैं। पढ़े लिखे आफिसर्स इतना नहीं। व्यापार में तो आज 50 कमाया कल 60 कमावेंगे। कब घाटा भी हो जावेगा। गवर्मेन्ट सर्वेन्ट की फिक्स होती है। इस कमाई में भी अगर देही अभिमानी न होंगे तो घाटा पड़ जावेगा। नौकरी वाले इतना ज्ञान भी नहीं उठाये सकते। मातायें तो व्यापार करती नहीं। उन के लिए और ही सहज है। कन्याओं के लिए और भी सहज है। क्योंकि माताओं को तो सीढ़ी उतरनी पड़ती है। बलिहारी उनकी जो इतनी मेहनत करते हैं। कन्यायें तो विकार में गई ही नहीं तो छोड़े फिर क्या। पुरुषों को भी मेहनत लगती है। कुटुम्ब परिवार की सम्भाल करनी पड़ती है। सीढ़ी जो चढ़े हैं सारी उतरनी पड़ती है। गद्दी2 माया ऊपर मार गिराये देती है। अभी तुम ब्रह्माकुमारी बनो हो। कुमारियाँ पवित्र ही होती हैं। सबसे जास्ती होता है पति का प्रेम। अब उनसे बुद्धि का योग और पतियों का पति जो एक है उनको याद करना है। और सब भूलना है। [illegible] की बच्चों में मोह होता है। बच्चे तो हैं ही अनजान। [illegible] के बाद मोह शुरू होता है। पहले स्त्री प्यारी लगेगी। फिर विकारों में ढकलने की सीढ़ी चढ़ना शुरू कर [illegible]। कुमारी निर्विकारी है तो पूज्य मानी जाती है। तुम्हारा नाम है ब्रह्माकुमारियाँ। तुम महिमा लायक बन [illegible] लायक बनती हो। बाप ही तुम्हारा टीचर भी है। तो तुम [illegible] का नशा रहना चाहिए। हम [illegible] भगवान जरूर भगवान भगवती हो बनावेंगे। फिर समझाया जाता है भगवान एक है।

बाकि सब है भाई2। दूसरा कोई क्लेदान नहीं। पूजा मेता ब्रह्मा से रचना होती है। शरीरधार.. मिर वृधी होती है। आत्माओं की लटी मिक्सेन नहीं कहेंगे। वृधी मनुष्यों की होती है। आत्माओं का तो भी नम्बर है। अभी तक आते रहते है। जब तक यहां है आते रहेंगे। झाड़ बढ़ता जायेगा। ऐसे नहीं कि सुखा जावेगा। इनका बनियन टी से भेंट किया जाता है। फउन्डेशन ह नहीं। बाकि सारा झाड़ खड़ा है। तुम्हारा भी ऐसे है। फउन्डेशन है नहीं। कुछ न कुछ निशानी है। अभी तक भी मंदिर बनाते रहते है। मनुष्यों को यह थोड़े ही पता है कि देवताओं का राज्य कब था मिर कहां गया। नेती2 करते रहते है। यह नाले जा तुम ब्राह्मणों को ही है। शंकराचार्य से तुम पूछो आप यह जिसकी पूजा करते हो यह लिंग कितना बड़ा है। कब जवाब नहीं देंगे। उन्हों का थोड़े ही मालूम है कि परमात्मा बिन्दी है। गीता में लिख दिया है अखण्ड ज्योति स्वरूप है। आगे बहुतों को सा0 होते थे। भावना अनुसार। बहुत लाल हो जाते थे। बस हम नहीं सहन कर सकते है। अब वह तो सा0 था। बाप कहते है सा0 से कोई कल्याण नहीं। यहां तो मुख्य है याद की यात्रा। जैसे पारा खिसक जाता है ना। यह भी घड़ी2 खिसक जाते है। कितना चाहते है बाप को याद करें मिर और और ख्याल आ जाते है। इसमें में ही तुम्हारी युद्ध है। ऐसे नहीं कि पट से पाप मिट जावेंगे नहीं। समय लगता है। कर्मातीत अवस्था हो जाये तो मिर यह शरीर न रहे। मिर नया शरीर चाहिए। जब तक नया शरीर न मिले तो सूक्ष्म वतन में ठहर जाते है। परन्तु कर्मातीत अवस्था नहीं पाये सकते। मिर उनको सतयुगी शरीर चाहिए। तो अब तुम बच्चों को बाप को याद करना है। अपने को देखते रहो। हम से कोई बुरा काम तो नहीं होता। पोता मेल जरूर रखना है। व्यापारी जल्द शाहुकार बन सकते है। वह शाहुकार तब बनते जब गवर्मेंटको ठगते है। बहुत पकड़ते भी है। विलायत में तो बहुतों के पैसे है। समझते है वहां सेफ्टी है। राजाओं के तो बहुत पैसा विलायत में रहते है। कोई तो आपत आद देखते है तो चले जाते है विलायत। मिर बहुत टाईम लग जाता है। इनकमटैक्स आद में दूसरे बादशाही में चले जाते है2 तो बाप के पास जो भी नालेज है वह दे रहे है। बाप कहते है मेरी आत्मा में यह ज्ञान नुंधा हुआ है। हुबहु वह ही जो कल्प पहले ज्ञान दिया था। बच्चों को ही समझावेंगे। और आ जावे। तुम इस सृष्टि चक्र को जानते हो। उसमें सब का पार्ट नुंधा हुआ है। बदल सदल नहीं होता। न कोई छुटकारा ही पाये सकते। हां बाकि बहुत समय मुक्ति मिलती है। तुम तो अलराउन्डर हो। 84 जन्म लेते हो। बाकि सब अपने घर होंगे। मिर पिछाड़ी में मच्छरों सदृश आवेंगे। मोक्ष मानने वाले यहां आवेंगे नहीं। वह मिर बिलकुल पिछाड़ी में चले जावेंगे। ज्ञान कब सुनेंगे नहीं। मच्छरों सदृश आये और गये। तुम तो ड्रामा अनुसार पढते हो। जानते हो बाबा ने 5000 का पहले भी ऐसे राजयोग सिखाया था। तुम मिर औरों को समझाते हो कि शिव बाबा ऐसे कहते है। अभी तुम जानते हो हम कितने उंच थे। अब कितने निच बने है। मिर बाप उंच बनाते है। तो ऐसी पुरुषार्थ करना चाहिए ना। यहां तुम आये हो रिफ्रेश होने। इसका नाम ही पड़ा है मधुवन। तुम्हारी कलकता वा बम्बई में थोड़े ही मुरली चलती है। मधुवन में ही मुरली बाजे। मुरली सुनने के लिए बाप के पास आना होगा। रिफ्रेश होने। नई2 पाईन्ट्स निकलती रहती है। समझा सुनने में तुम मिस करते हो। पर्के बहुत रहता है। आगे चल बहुत पार्ट देखेंगे। बाबा पहले सब सुनावे दे तो सब टेस्ट निकल जाये। आते2 इमर्ज होता जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। बाप आये है रूहानी सेवा करने तो बच्चों का भी पर्ज है रूहानी सेवा करना। कम से कम तो यह भी बताओ बाप को याद करो तो पवित्र बनो। पवित्रता में ही पेस होते है। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। हम नाटक में

के सम्मुख बैठे है। जिसको कोई भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर वह शिव बाबा ही है। वे योग निकाल देना चाहिए। शिव बाबा का यह रथ है। यहां रिगार्ड न रखेंगे तो धर्मराज द्वारा खानी पड़ेगी। बड़ों का रिगार्ड तो रखना है ना। आदी देव का कितना रिगार्ड रखते इतना रिगार्ड है तो तो चैतन्य का कितना रखना है। बड़ो का भी रिगार्ड न रखेंगे तो कहेंगे। कई तो कहते है हमको तो शिव बाबा से मिलता है उनको ही हम र